भगवद् गीता का ज्ञान – (2)

" ईश्वर की अनन्य-भक्ति की शक्ति वेदों के ज्ञान, तप, दान और यज्ञ से भी अधिक है "

- श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के 11वें अध्याय के 24वें श्लोक के अनुसार, ईश्वर का विराट रूप देखकर अर्जुन भयभीत तथा अशान्त हो जाता है। अतः 46वें श्लोक में वह भगवान् श्रीकृष्ण से इस प्रकार प्रार्थना करता है -

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव ।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥११:४६॥

अर्थात - "मैं आपको वैसे ही मुकुट-धारी, गदा-धारी और हाथ में चक्र लिए हुए देखना चाहता हूँ। अतः, हे सहस्र-बाहो! हे विश्व-स्वरुप! कृपया आप उसी चतुर्भुज रूप से प्रकट होइए।" **(गीता – 11:46)**

- अर्जुन की इस प्रार्थना पर भगवान् श्रीकृष्ण ने अपना शंख-चक्र-गदा-पद्म युक्त चतुर्भुज रूप अर्जुन को दिखलाया। **(गीता – 11:50)**

- उसके उपरान्त श्री भगवान् बोले –

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम । देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥११:५२॥
नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया । शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥११:५३॥
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन । ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥११:५४॥

अर्थात - "हे अर्जुन! मेरा जो चतुर्भुज रूप तुमने देखा है, इसके दर्शन बड़े ही दुर्लभ हैं। देवता भी सदा इस रूप के दर्शन की आकांक्षा करते रहते हैं। जिस प्रकार तुमने मुझे देखा है - इस प्रकार चतुर्भुज रूप वाला मैं (ईश्वर) न वेदों से, न तप से, न दान से और न यज्ञ से ही देखा जा सकता हूँ। परन्तु, हे परन्तप अर्जुन! अनन्य भक्ति के द्वारा इस प्रकार चतुर्भुज रूप वाला मैं (ईश्वर) प्रत्यक्ष देखने के लिए, तत्त्व से जानने के लिए और प्रवेश करने के लिए शक्य हूँ (अर्थात केवल अनन्य भक्ति से ही मेरा चतुर्भुज रूप तत्त्व से जानना, देखना और प्राप्त करना सम्भव है)।" **(गीता – 11:52, 11:53, 11:54)**

------- यह है ईश्वर की अनन्य-भक्ति की महिमा -------

(परन्तप = शत्रुओं को कष्ट देने वाला, तप द्वारा इंद्रियों को वश में करने वाला)